International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

इक्कीसवीं सदी की कविता में संवेदना के तेवर

सुशीला
Deptt of Hindi
Email : ms4sushila@gmail.com
Ward no. 6 Gali no. 1,Thana Kalan Road, Sant Colony
Kharkhoda, Sonepat (Haryana)

साहित्य का मापदण्ड–अनुभूति की मौलिकता तथा स्पर्श की क्षमता है। यह मानव–जीवन की सभी रिक्ताओं एवं अच्छे जीवन की दिशा दिखाता है। साहित्य सामाजिक सरोकारों और संवेदनशील व्यक्ति के हृदय का स्पर्श है। यह ऐसा विज्ञान है जो मानव संस्कृति की रचना में नींव की ईंट एवं दिशा–बोध का कार्य करता है। यह इतिहास की कन्दराओं में भटकता, सरोकारों से जूझता, लोगों को प्रेरित करता हुआ अग्रसर बना रहता है।

भारतीय मनीषा ने शिक्षा के क्षेत्र में मानवीय व्यक्तित्व के समग्र विकास को सम्मिलित करके सैद्धान्तिक अध्ययन की व्यावहारिक पद्धति विकसित की थी। मेधावी लोगों ने ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के विकास में अग्रणी भूमिका निभायी थी। प्राचीन काल में जीवन का लक्ष्य पुरूषार्थ सिद्धि यानी–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की सिद्धि था, जिससे मानव मेधा, क्षमता एवं व्यक्तित्व के आयाम उद्घाटित होते थे। इन्ही भारतीय मनीषा ने युगों–युगों से अपने समाज, सभ्यता और संस्कृति को उत्कर्ष प्रदान किया। यद्यपि भारतीय शिक्षा–पद्धति की प्रविधि पर निरंतर विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमण होते रहे, फिर भी हमारी शिक्षा के मानक नहीं परिवर्तित हुए और उनमें युगानुकूल आवश्यकता अध्ययन का समावेश होता गया।

सम्यम्, शिवम्, सुन्दरम् हमारी संस्कृति के आधार रहे हैं। सत्यवादी सत्य का, नीतिशास्त्री शिव का तथा सौन्दर्यवादी सौन्दर्य का समर्थन करते रहे हैं। साहित्य का मूल आधार प्रमाणिक अनुभूति और अनुभव की परिपक्कवता होती है। विश्व के सभी आचार्यों ने लोकहितवाले मनोरंजन को साहित्य का प्रयोजन माना है। साहित्य का लोकहितकारक गुण शाश्वत मूल्य है। साहित्य का आधुनिक मूल्य समानता एवं स्वतंत्रता है।

क्या और कैसे लिखा जाय–यह प्रत्येक युग की समस्या रही है। साहित्य इससे तटस्थ नहीं रह सकता। हिन्दी कविता के इतिहास पर दृष्टि डाली जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि कविता के तेवर युग के अनुरूप बदलते रहे हैं। आदिकालीन कविताओं में आश्रयदाता शासकों का प्रशस्तिगान था तो मध्ययुगीन कविता भक्ति के विविध आयामों से परिपूर्ण थी। रीतिकालीन कविताओं में पाण्डित्य प्रदर्शन तथा श्रंगार के नाना स्वरूपों का चित्रण है। आधुनिक कविता ने अपने प्रादुर्भाव के साथ नये तेवर एवं जागरण का शंखनाद फूंकने का प्रयास किया है। युगीन संक्रमण और अनाचार की परवाह न करते हुए इस काल के कवियों ने इस काल की घटित घटनाओं को निर्भय होकर उद्घाटित करने का प्रयास किया है। 21वीं सदी का हिन्दी काव्य अपने नये तेवर एवं तमीज की संवेदना के साथ आता है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

कविता केवल अभिव्यक्ति का माध्यम या साधन नहीं बल्कि साध्य भी होती है। इसलिए भाषा के क्षेत्र में कविता या कविता के क्षेत्र में भाषा का पृथक तात्पर्य मिलता है। कविता अनुभव एवं विचारों की अभिव्यक्ति है अथवा संवेदनाओं का समुच्चय है।

कविता की अभिव्यक्ति उसकी उपयुक्त अद्वितीयता तक एक विधा के रूप तक ही सीमित नहीं रहती बल्कि सुबुद्ध पाठक को अच्छी कविता समझनी और साधनी पड़ती है और व्यवहार के कविता में रहना पड़ता है। 21वीं में अन्वय सदी के पश्चात् वाक्य का जो स्वरूप बनता है। वह कविता है। आज कविता को अर्थाशय के रूप में समझा जाता है। कविता श्रोता या पाठक के भीतर जिस अनुभव का सृजन करती है वही उसका अर्थ है। नव्यता के कारण कविता को समझने के लिए कई सोचों को छोड़ना पड़ता है और एक अच्छी कविता अपने अनुरूप अपने पाठक को भी परिवर्तित कर डालती है।

वैश्वीकरण ने कमाई के विविध मार्ग खोले हैं। पहले बाजार के आधार, मेले हाट थे अब उनके स्थान पर 'माल–बाजार' आ गये हैं। व्यय के बाजार को आय से अधिक बना दिया गया है। खान–पान, परिधान, चाल–ढ़ाल अब बाजार से निर्देशित एवं नियन्त्रित होने लगे हैं। वातावरण में परायान तथा बहिष्कृत रंग–ढंग छा गये हैं। कपड़ा पहनने के बावजूद नंगापन नहीं छुपता। हिन्दी के उत्थान और विकास पर अंग्रेजी में 'डिसकस' किया जाता है। आवागमन और सूचना तंत्र में पूरा विश्व नजदीक तो आया है लेकिन सन्निकटता के स्थान पर मन की दूरियां बढ़ी हैं। अच्छी बातें आत्म–विभाजन में बदल जाती हैं। अनैतिकता तथा असमानता पर आधारित बाजार और उत्पाद बढ़े हैं। ऐसे में कविता नैतिक बल प्रदान करती है। 21वीं सदी के व्यक्ति का जितना चारित्रिक, पतन हुआ है उतना अभी हिन्दी कविता का नहीं हुआ है। आज की कविता में श्लील–अश्लील का कोई खास अर्थ नहीं होता। जो जीवन में घटित हो रहा है वह किस–न–किसी रूप में आता है। कविता की भल ही मर्यादा हो लेकिन अभिव्यक्तित की कोई मर्यादा नहीं है।

कविता हमें मूल गुणों की स्मृति कराती है, जिसमें उत्पादों की नश्वरता निहित होती है। आज कविता के अभिव्यक्ति की तकनीक परिवर्तित हो चुकी है। अब केवल मनोरंजन, प्रशस्ति–गान, भक्ति, सौन्दर्य–विवेचन, पाण्डित्य प्रदर्शन, अंग निरूपण आदि तक अपने को परिमित नहीं रखती वरन् समाज, धर्म, कर्त्तव्य–बोध की ओर ले जाती है जिससे हम अपने को उत्तरदायित्व–बोध से संलग्न रखें। संस्कृति परिमार्जन, परख और परिशोधन के पश्चात् ही किसी विचार एवं व्यवहार को सांस्कृतिक आधार प्रदान करती है। यह सुसंस्कारित आग्रहों से इतना परिपूर्ण होती है कि उसे साधारण लोकधर्मिता के मानवीय संवेदना की कसौटी पर अपना मूल्यांकन कराना पड़ता है। कसौटी पर खरा उतरने के पश्चात् ही आचार व्यवहार सांस्कृतिक मूल्य कहलाने योग्य बन पाते हैं। संस्कृति की भाँति परम्परा में भी परिवर्तन अन्तर्निहित है।

कविता में गहरी मानवीय संवेदना होती है। कवि हरे प्रकाश उपाध्याय ने अपने कविता संग्रह 'खिलाड़ी दोस्त तथा अन्य कविताएं' में सभी मूल्यों पर बाजार को हावी देखकर सवाल खड़ा किया है–

माँ का दूध कितने रूपये किलो बिकना चाहिए !
सोचो एक दिन सब लोग।
धरती ने शुरू कर दी दुकानदारी तो क्या होगा ?

इसी प्रकार समय क्रुरता पर उनकी संवेदना प्रस्तुत है–

अभी तो भूमिका बांध रहे हैं कसाई।
छूरे पजा रहे हैं और धार जांच रहे हैं।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

थोड़ा ठहरो देखोगे जब कतरेंगे कलेज।
आग में भूनने, तश्तरी में सजाकर बाजार में बेचेंगे।

21वीं सदी में संवेदनाओं, वैचारिक संघर्षों और स्वाधीनता पर संकट हैं। विश्व अब व्यापार की संस्कृति से एक हो रहा है जबकि पूर्व में यह धर्म की संस्कृति से एक होता था। अब विश्व बाजार और विश्व सूचना संचार यंत्र इतने व्यापक और शक्तिशाली हो गये हैं कि संपूर्ण विश्व को एक गाँव बना दिया गया है। भारतीय चिंतन 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से अवधारणा भिन्न है। विश्व ग्राम का तात्पर्य यह हो गया है कि दुनिया छोटी हो गयी है। छोटा होने का अर्थ है कि ग्लोबल विलेज में गांव एक दूसरे के पहुंच के अन्तर्गत हो गये हैं। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में पूरी वसुधा का कौटुम्बिक संबंध होता है, जिसमें एक–दूसरे के प्रति कल्याण की भावना रहती है। विश्व में नाना प्रकार की संस्कृतियां हैं। विश्व को पहुंच के अन्तर्गत आ जाने से इसके वैविध्य का संतुलन लड़खड़ा रहा है। ग्लोबलाइजेशन से एक–दूसरे प्रकार की दुनिया उत्पन्न हो जाने की सम्भावना है, जिसमें संवेदनाओं का महत्त्व नहीं होगा।

विश्व के अतीत को खँगाला जाय तो इस जगत् में कई जगह कई संस्कृतियाँ कई धर्म दृष्टिगत होते हैं जिससे हम सभ्यताओं की ओर अग्रसर होते हैं। सभी संस्कृतियों और धर्मों में समय–समय परिवर्तन हुए हैं। भारतीय धर्म में अधिक परिशोधन एवं परिवर्द्धन हुए हैं। परिशोधित धर्म अधि सहिष्णु, लचीले और दीर्घजीवी होते हैं। परिवर्तन की समर्थक संस्कृतियों ने अपने में से बहुत–कुछ खोया और उससे अधिक पाया है। विविध संस्कृतियों, धर्मों और सभ्यताओं में संघर्ष चलता रहा है। मनुष्य अपनी अभिव्यक्ति के लिए अनेक परिष्कारों–भरे तकनीक अपनाये हैं और सभ्यमा की गढ़ी हुई व्याख्याएं दी हैं। सभ्यता ने अपनी पहचान धर्म एवं संस्कृति के संगम से रची है। सभ्यता में सहिष्णुता, सहभागिता तथा शिष्टाचार अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। तकनीक ने सभ्यता के क्रिया–कलापों को बदल दिया है। आज मानव कर्मों की चरम परिणति बनकर तकनीक प्रत्यक्ष प्रस्तुत हुई है। आज हमें वैचारिक जगत् के साथ आर्थिक, उत्पादन और उपयोग को भी एक साथ अंग बनाने की बाध्यता है।

21वीं सदी के समाज में सामाजिक, आर्थिकम, धार्मिक तथा नैतिक विषमताएं व्याप्त हैं जबकि कविगण इस विषमता पर प्रहार करते चले आ रहे हैं। जब–जब युगीन परिस्थितियां करवट लेती हैं तब–तब काव्य में नवीन मूल्यों को आत्मसात् किया जाने लगा है। समाज के साथ–साथ जीवन–मूल्य और संवेदनाएं बदलती रहती हैं। आज मूल्यों पर बाजार एवं स्वार्थ हावी हो चुका है जिससे सभी संवेदना किनारे चली गयी हैं। संवेदनाओं का यह संकट जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में है। समाज में व्याप्त वर्ग भेद, आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, बाढ़, महामारियों ने मानवीय संवेदनाओं को हिलाकर रख दिया है। मानवता का विकास केवल वैज्ञानिक प्रगति से नहीं, उसके लिए मन की शुद्धि व शान्ति के साथ साहित्य के क्षेत्र में नवीनता के साथ मर्यादित संवेदनाओं को प्रस्तुत करना पड़ता है। यद्यपि विघटित होते रिश्तों में चेतना तथा जागृति लाने के लिए 21वीं सदी के कवि निरन्तर संघर्षरत हैं, लेकिन युवा–पीढ़ी दिग्भ्रमित हो गयी है। नयी जीवन शैली के संवेदनाओं को आत्मसात् करने की लालसा ने व्यक्तियों को कुण्ठित और हताश कर दिया है। राजनीति ने तो समाज की सोच ही बदल डाली है। ईमानदारी, संवेदना, त्याग–जैसे आदर्शों का अवमूल्यंन होता जा रहा है। इन शिथिल पड़ते रिश्तों की डोर को पकड़कर कवि आगे बढ़ना चाहता है।

रिटायर्ड पापा बुढ़ी माँ और लाडले छोटी की लाडली
नीलू में धीरे–धीरे प्रवेश करती उदासी से
भयभीत रहने लगा है घर

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

हर महीने की पहली शाम के अलावा।

बाजारीकरण ने मानवीय संवेदनाओं पर सवाल खड़े कर दिये है। 21वीं सदी का व्यक्ति व्याकुल है क्योंकि असीमित ऐश्वर्य के बाद भी उसे सुख–शान्ति नहीं मिल पा रही हैळ। संबंधों के बिखराव और टूटन का कारण संवेदनहीनता है जिसका क्षरण होता जा रहा है। प्रजातंत्र की बिद्रूपताओं पर चंद्रकान्त देवताले का सवाल है–

प्रजातंत्र की रथ यात्रा निकल रही है
औरतों और बच्चों को रौंदा जा रहा है
गुण्डों और नोटों की ताकत से हतप्रभ लोग
खामोश खड़े हैं।[प]

औद्योगिकीकरण से जीवन संवेदनाएं कुन्द पड़ गयी हैं। मशीनी युग में व्यक्ति यंत्रवत् आचरण करने लगा है। संवेदनाओं के स्रोत सूखते जा रहे हैं। लीलधर जगूड़ी के शब्दों में–

पूरी नदी पाइपों में डाल दी गयी है
और उसके रास्तों पर तरबूजों की खेती का प्रस्ताव पास हो चुका है
यदि कोई नदी के बारे में पूछेगा तो उसे तरबूजों के बारे में बताऊँगा।

लेखन मात्र शौक या फैशन नहीं, अन्याय के प्रतिकार की अभिव्यक्तित भी है। भारतीय समाज के परिवर्तित होते परम्परागत स्वरूप में अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत समाज का गहन एवं सूक्ष्म परख साहित्यकारों का उद्देश्य होता है। वैश्वीकरण के दौर में समाज में आर्थिक तथा सांस्कृतिक दबावों के चलते व्यक्ति, समाज, सत्ता में रिश्तों के धरातल पर हो रहे परिवर्तनों को आज के कवि लक्षित कर अपनी बातें बेझिझक कहते हैं। जैसी यातना और यन्त्रणा उनके जीवन में है, वैसी ही अब उनकी कविताओं में भी व्यक्त होने लगी है। तसलीमा नसरीन के कविता–संग्रह–'वन्दिनी' (वाणी प्रकाशन) में उन्होने बड़ी विकलता से गुहार की है–

सुनो, दोस्तों ! सुनो,
दुआ करो
कभी किसी दिन सुरक्षित निकल सकूँ।
असुरक्षित घर में रहने का संयोग मुझे नसीब हो।

वे जानना चाहती हैं–

तुम सब मिलकर मेरा कोई एक गुनाह ढूंढ़ निकालो,
कोई गुनाह साबित हो जाता तो तसल्ली हो जाती
निर्वासन इस हद तक निर्वासन नहीं लगता

इसलिए कहा कि–

सच बोलने के लिए मैनें खोली जुबान
तुमने मरोड़ दी गर्दन।

आज के समय मे ंसब–कुछ परिवर्तित हो चुका है–रिश्ते–नाते, संवेदनाएं सब–कुछ आउट ऑफ डेट हैं। अत्याचारों के नये तरीके ईजाद लोने लगे हैं। स्वतंत्रता की सीमाएं टूट चुकी हैं। किसी पर द ुश्चरित्र का आरोप–अपराध, पिछड़ापन है। किसी अन्य के साथ अनैतिक संबंध जीवन जीने की स्वतंत्रता या नश्वर देह का सार्थक अपभोग बन चुका है। आज मानव देह–चीज, माल, प्रदर्शन, बाजार, सेक्स बनकर रह गयी

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

है। देह का रिश्वत के रूप में उपयोग का कोई पश्चात्ताप अथवा बोध नहीं रह गया है। इसीलिए अकेलेपन एवं अवसाद की प्रवृत्ति बढ़ रही है। कविता की संवेदनाएं विविध, अप्रत्याशित और अज्ञात होती हैं। उन्हे निश्चित बिन्दुओं में नहीं डाला जा सकता।

21वीं सदी की व्यावहारिक शिक्षा, तकनीकी वातावरण, पूंजी–'बाजार, मीडिया–विस्तार तथा प्रतिस्पर्द्धा ने व्यक्ति की संवेदनाओं को भी विभाजित कर दिया है। व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा और स्वार्थ ने हर प्रकार की सोच को परिवर्तित कर डाला है। कविता भी इससे अधिक प्रभावित हुई है। जीवन–मूल्य क्षीण हो चुके हैं–

सही पहचान का संकट
अभिशप्त मानव की
भावी नियति है क्या ?
भ्रांकित है बीज
स्वयं कोख भयभीत है
जन्म का महोत्सव भी
मृत्यु का मशान बन जाता है।
आखिर क्यों ? आखिर क्यों ?

21वीं सदी में जिन्दगी बदल–सी गयी है। व्यक्ति की सोच बाजार पर आश्रित हो चुकी है। देवेन्द्र आर्य की सोच कुछ इस प्रकार की है–

बँटते–बँटते कटते–कटते
सिकुड़ के दिल हो गया निकाय
सुख–दुख डिब्बा बंद हो गये
रिश्ते हुए मु भी चाय

कविता में समाज, राष्ट्र और मानव का चिन्तन होता है। यह विकासोन्मुखी चेतना का आधार है। इसमें युगीन सत्य के साथ तत्कालीन समस्याओं के आदर्श निहित होते हैं। 21वीं सदी की कविता में देश की सभी समस्याओं, विषमताओं एवं विसंगतियों के उल्लेख के साथ ही उससे मुक्ति पाने की भावना भी व्यक्त की जाती है। सभी क्षेत्रों में व्याप्त अनाचार का हृदयस्पर्शी चित्रांकन आज की कविता का उद्देश्य है। देश में व्याप्त असमानता, विपन्नता, निरीहता से उभरते असंतोष की प्रतिध्वनि सर्वत्र गूँजती है।

हिन्दी काव्यधारा के इस स्वर का विस्तार विदेश तक फैला है। प्रवासी कवियों की कविताएं जनमानस ऊर्जा भर देती हैं–

मानव उर में विश्व प्रेम का, नित निर्मल निर्झर भरने दो,
भारत को भारत रहने दो।

21वीं सदी की कविताओं में टूटन की पीड़ा, बिखराव की टीस मानव हृदय को कुरेदती है। यथार्थ से जुड़ा कवि जागृति लाने का भरपूर प्रयास कर रहा है। इसके लिए मानवीय संवेदनाएं अनिवार्य हैं। आज की युवा पीढ़ी की कविताओं का उद्देश्य तभी पूरा होगा, जब वह ऐसे समाज का निर्माण करें जिसमें मानवीय नाद, संवेदनाएं तथा मानव–कल्याण हो। कविता का धर्म है िकवह अपने सृजन से नय संस्कार रचे, सम्भावनों की खिड़की खोले तथा अपने चिन्तन को उदार, प्रयोगशील और सर्जनात्मक बनाये। आज की कविता में गतिशीलता का अभाव है। ऐतिहासिक दृष्टि, यथार्थवादी चित्रण, प्रतिरोधी स्वर तथा सामाजिक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 02 Issue 13
December 2015

चेतना होने के बाद भी 21वीं सदी के कवियों के अन्तःकरण मे आत्मपरक ईमानदारी एवं वस्तुपरक सत्यपरायणता का द्वन्द्व है जिससे कविता सौन्दग्र की कविता मात्र बनकर रह जाती है, संवेदनाओं से उनका कोई संबंध नहीं रहता।

संदर्भ संकेत–

1 कुँवरनारायण, वाजश्रवा के बहाने, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ 56
2 रामदरश मिश्र, उस बच्चे की तलाश में, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ 90
3 हरिओम राजोरिया, खाली कोना, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007, पृ 96
4 शाली गुजराल, धरती का आर्त्तनाद, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2004,पृ 66
5 नीलोत्पल, अनाज पकने का समय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 2009, पृ 16
6 नीलेश रघुवंशी, धरती हाँफ रही है, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008, पृ 13
7 राजेन्द्र शर्मा, नीलिमा बंसल–राजेन्द्र शर्मा, माध्यम अक्टूबर–सितम्बर, 2006 पृ0 सं0 167
8 सबसे जरूरी काम–समकालीन काव्य, सं0 सुरेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0 सं0 23
9 21वीं सदी का आल्हा–देवेन्द्र आर्य, पृ0 सं0 128
10 प्रो0 हरिशंकर 'आदेश'–प्रवासी की पाती भारत माता के नाम, पृ0 सं0 53